Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 1, Jan – 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 05/12/2020 Accepted on : 05/01/2021 Publication Date: 31/01/2021

सरकारी और गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन

डॉ. अनीता चौहान
प्राचार्या,
ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेंट साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी,बरेली उ.प्र.(भारत)
E-Mail: dranitachauhan61@gmail.com

डॉ. भानु प्रकाश
शिक्षा विभाग
ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेंट साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी,बरेली उ.प्र.(भारत)
E-Mail: prakashbhanu747@gmail.com

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्त्ताओं ने सरकारी व गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं के मूल्यों का अध्ययन डा. हरभजन सिंह एण्ड एस.पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित अध्यापक मूल्य मापनी के माध्यम से(सैद्धान्तिक,आर्थिक,सौन्दर्यात्मक,सामाजिक,राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों का) किया। जिससे स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षिकाओं के सैद्धान्तिक,आर्थिक,सौन्दर्यात्मक,सामाजिक मूल्य पुरूष शिक्षकों से कम पाए गये।धार्मिक मूल्य शिक्षकों में शिक्षिकाओं की अपेक्षा कम पाए तथा राजनैतिक मूल्य शिक्षक-शिक्षिकाओ में समान पाए गए।

संकेतक शब्द : सरकारी व गैर सरकारी शिक्षण संस्थाएं, शिक्षक-शिक्षिकाएं, विभिन्न मूल्य।

१ प्रस्तावना :

शिक्षा मानव विकास का माध्यम है । शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियो का विकास होता है । मनुष्य की शिक्षा उसके जन्म के साथ ही प्रारंभ होती है और आजीवन चलती रहती है । शिक्षा व्यक्ति को सभ्य सुसंस्कृत एवं कुशल नागरिक बनाती है । शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा के शिक्ष् धातु मे अ प्रत्यय लगने से बना है । शिक्षा शब्द का अर्थ है – सीखना । अतः शिक्षा एक प्रक्रिया है और एक सामाजिक कार्य है जो कोई समाज अपने हित के लिए करता है ।

२ अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

शिक्षा का मूल्यों से घनिष्ट संबंध है । मूल्य शिक्षा की आवश्यकता सदैव रही है । बिना मूल्यों के मनुष्य के व्यवहार निश्चित व नियमित नही हो सकता । मनुष्य के व्यवहार को सही दिशा प्रदान करने के लिए मूल्य शिक्षा की आवश्यकता होती है । आज निरन्तर मूल्यों का ह्रास हो रहा है । मूल्यों के ह्रास से अभिप्राय है समाज द्वारा स्वीकृत आदर्शों को अपने अन्तःकरण में न उतारना और न उनके अनुरूप आचरण करना । मूल्य वह हैं जो मानव इच्छा को पूर्ण करते हैं । मूल्य एक मानक विश्वास है जिनके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है । आज अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में मूल्य शिक्षा की बहुत आवश्यकता है । छात्राध्यापकों को मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य उनके मस्तिष्क से संकीर्ण विचारों को समाप्त करना है । प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था भारतीय संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप एवं मूल्य आधारित थी । विदेशी आक्रमणकारियों के भारत आगमन तथा अपनी सभ्यता एवं अपनी संस्कृति से भारतीयों को प्रभावित करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन किया जिससे भारतीय शैक्षिक व्यवस्था शनैः – शनैः कमजोर हो गयी। भारत को अपनी गौरवशाली परम्पराओं तथा मूल्यों पर सदा अभिमान रहा है । परन्तु आज हम प्राचीन परम्पराओं तथा मूल्यों को विस्मृत करते जा रहे हैं । आज न केवल नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है वरन् शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुशासन हीनता है । श्रम के प्रति अनास्था तथा स्वकर्तव्य के प्रति उदासीनता बढी है । जीवन में सफलता का मुख्य आधार शिक्षा में भी परिवर्तन होते रहते हैं । आज शिक्षा को व्यवसायोन्मुख किया जा रहा है ।

मूल्य निर्धारण में समाज की प्रमुख भूमिका होती है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । उसमें उचित-अनुचित की समझने की शक्ति होती है । इस शक्ति के आधार पर मनुष्य के लिए अपनी सभी परिस्थितियों **के साथ साहचर्य एवं समायोजन सम्भव है ।**

"मूल्य मनुष्य के वे आदर्श, विश्वास व मानक हैं जो उसके जीवन चक्र को निर्देशित करते हैं । मूल्य व्यक्ति के वे निर्देशित सिद्धांत हैं जो उसके सम्पूर्ण जीवन दर्शन व शैली को निर्धारित करते हैं। मूल्यों की व्यवस्था जिनके प्रति व्यक्तियों के विचार कार्य अथवा भावनाएं आदि निर्देशित है ।"

-आल पोर्ट

स्प्रैंगर ने अपनी पुस्तक **Types of Men: The Psychology and Ethics of Personality** में मूल्यों को छः श्रेणियों में बाँटा है-

1.सैद्धान्तिक मूल्य 2. आर्थिक मूल्य
3.सौन्दर्यात्मक मूल्य 4. सामाजिक मूल्य
5.राजनैतिक मूल्य 6. धार्मिक मूल्य

३ **समस्या कथन :** – सरकारी और गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन करना ।

४ उद्देश्य :-

- सरकारी व गैर सरकारी अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन ।
- सरकारी शिक्षक-शिक्षिकाओं के मूल्यों का अध्ययन ।
- गैर सरकारी शिक्षक-शिक्षिकाओं के मूल्यों का अध्ययन ।

५ परिकल्पना:

- 1.सरकारी व गैर सरकारी अध्यापकों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।
- 2.सरकारी शिक्षक-शिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- 3.गैर सरकारी शिक्षक-शिक्षिकाओं के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

६ **सीमांकन :** केवल बरेली जिले के सरकारी व गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं तक सीमित है ।

७ **उपकरण:** प्रस्तुत कार्य में शोधकत्री ने **Dr.(Mrs.) Har Bhajan Singh and Dr. S.P. Ahluwalia** द्वारा निर्मित **"Teacher Value Inventory"**, का प्रयोग किया है।

सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षक-शिक्षिकाओं के मूल्यों की सारणी

	T	E	A	S	P	R
शिक्षक	1733	1429	2857	1922	1149	1299

	T	E	A	S	P	R
शिक्षिकाएं	1586	1253	1299	1775	149	1381

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षिकाओं के सैद्धान्तिक,आर्थिक,सौन्दर्यात्मक, सामाजिक मूल्य पुरूष शिक्षकों से कम पाए गये । अतः परिकल्पना स्वीकृत नही हुई।
-राजनैतिक मूल्य शिक्षक-शिक्षिकाओं में समान पाये गये। अतः परिकल्पना स्वीकृत हुई।
-धार्मिक मूल्य शिक्षकों में शिक्षिकाओं की अपेक्षा कम पाये गये। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हो गयी।

संदर्भ ग्रन्थ:

1. लाल, रमन बिहारी एवं पलोड (2013), सुनीता, "शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग", आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2016), "मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य", आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. सक्सेना, डॉ. सविता (2011), "मूल्य शिक्षा", ज्योति प्रकाशन, आगरा।